विश्व पुस्तक मेले के बाल मंडप में पुस्तक संबंधी एक कार्यक्रम में बाल भवन की पूर्व

आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अशोक चक्रधर ने की।

अधिकार है और उनके साथ ऐसा बर्ताव करने का कोई आधार नहीं है।

दी जाएगी।

अधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इस

संस्थानों और समाज के विभिन्न तबकों का इसमें सहयोग ले रही है।

नशीली रात के बाद की अधखुली सुबह

वर्षा दास

तस्वीरें बोलती हैं और न बोल कर भी बहुत कुछ कह देती हैं। तस्वीरें दस्तावेज हैं, कलाकृति भी। वे सुंदरता और कुरूपता को समान निष्ठा से बिना किसी पक्षपात के हमारे सामने रख देती हैं। सुंदर को कुरूप और कुरूप को सुंदर बना देने की दृष्टि और क्षमता संवेदनशील तस्वीरकारों यानी फोटोग्राफरों में होती है। इसी बात को साबित कर रहे हैं यह प्रतिभावान फोटोग्राफर अपनी प्रदर्शन के जरिए। पाब्लो बार्थोलोमियो राष्ट्रीय संग्रहालय में सत्तर और अस्सी के दशक में खींची गई श्वेत-श्याम तस्वीरें प्रदर्शित कर रहे हैं, जिसका शीर्षक है- बारह-भीतरः तीन शहरों की कहानी।

कहानी वास्तव में शहरों की नहीं, बल्कि उन शहरों में रह रहे पाब्लो, उनके परिवार और मित्रों की है। इसे आत्मकथात्मक प्रदर्शनी भी कह सकते हैं। उनके पिता बर्मा के, मां भारतीय- दोनों कला से जुड़े हुए। पिता दृश्य कला से जुड़े थे और मां वास्तुकला से। पाब्लो के पिता रिचर्ड बार्थोसलोमियो तस्वीरें खींचते थे। उन्होंने घर में ही डार्करूम बनाया हुआ था। वहीं पर तस्वीरें डेवलप की जाती थीं। डार्करूम में कोरे सफेद कागज पर तस्वीर को उभरता देखना पाब्लो के लिए एक अद्‌भुत और असरदार अनुभव था।

पाब्लो का पढ़ाई में मन नहीं लगा। पंद्रह साल की उम्र में पाब्लो को स्कूल से निकाल दिया गया। चूंकि स्कूली शिक्षा पूरी नहीं की थी, पाब्लो को किसी अन्य शैक्षिक संस्था में दाखिला नहीं मिल पाया। तो आम भाषा में जिसे कहते हैं 'भटक गया', पाब्लो भी भटक गया। नशे की गोलियां लेना, उसी माहौल में समय बिताना उसे अच्छा लगने लगा। आगे चलकर पाब्लो ने 'ड्रग एडिक्ट्स' यानी नेशेड़ियों की कई तस्वीरें खींचीं और वे सारी तस्वीरें अब एक महत्त्वपूर्ण शृंखला बन गई हैं। और फिर पाब्लो फोटो पत्रकार बने। पाब्लो की भोपाल गैस त्रासदी तस्वीर को जब 1985 का 'द पिक्चर ऑफ इयर' का पुरस्कार मिला और इसी स्पर्धा में उन्होंने रघु राय और दिलीप मेहता जैसे अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फोटोग्राफरों को पीछे छोड़ दिया तो पाब्लो के प्रति बहुतों का ध्यान आकर्षित हुआ। फिर तो वे विदेशी एजेंसियों के साथ जुड़े, देश-विदेश की विख्यात पत्रिकाओं में पाब्लो की खींची हुई तस्वीरें छपने लगीं। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के आदिवासियों की अनगिनत तस्वीरें खींचीं जो अत्यंत आकर्षक शृंखला बन गई।

कुछ समय पहले पाब्लो को पिछले 35 साल में खींची हुई तस्वीरों की लगभग पैंतीस हजार नेगेटिव में डुबकियां मारने का मन किया।

कला

पाब्लो बार्थोलोमियो

और उसी समुद्रमंथन का एक छोटा-सा हिस्सा 'बाहर भीतर' शीर्षक से प्रदर्शित किया गया है।

इस प्रदर्शनी की सभी तस्वीरें श्वेत-श्याम है। सभी का विषय सामान्य जिंदगी के विभिन्न पहलू हैं। जैसे कि एक तस्वीर पाब्लो के माता-पिता की है। दोनों के हाथों में अधजली सिगरेट है, उसमें से धुआं निकल रहा है। दोनों एक सोफे पर बैठे हैं। पिता के होठ दांतों के बीच दबे हुए हैं। आंखें कहीं बिना मकसद, बिना किसी लक्ष्य के ताक रही हैं। उनमें हताशा झलक रही है। एक हाथ जांघ पर टिका है तो दूसरा उंगलियों के बीच सिगरेट थामे घुटने पर। बगल में बैठीं पाब्लो की मां ने अपना सिर दोनों हथेलियों बीच पकड़ रखा है। सिर झुका हुआ है इसलिए चेहरा दिखाई नहीं देता, लेकिन यह भंगिमा भी निराशा, हताशा को प्रकट कर रही हैं। पूरी तस्वीर में दर्शक के दिल को छू जाने वाली उदासी है।

एक और तस्वीर है पाब्लो की खुद की। उसमें पालथी मारकर वह स्वयं कुर्सी पर बैठे हैं। दोनों हाथ घुटनों के सहारे दाएं बाएं लटक रहे हैं। नशीली उनींदी आंखों से वे कैमरे की ओर देख रहे हैं। इसके शीर्षक में वे बताते हैं कि नशीली रात के बाद की अधखुली सुबह। अपनी फोटो खींचने के लिए पाब्लो ने ऑटो शटर लगाकर इसे खींचा होगा।

पाब्लो इक्यावन वर्ष के हुए। अपनी स्वर्ण जयंती के अवसर पर अपने अतीत को टटोलना, और वह भी ऐसा अतीत जिसमें शुरू के उतार-चढ़ाव के बाद केवल चढ़ान ही दिखाई देती है, किसी भी कलाकार के लिए एक संतोषनक अनुभव होता है। तस्वीरकार का वह अतीत जिसमें किशोरावस्था के दौरान रूसी कैमरा जोर्की से तस्वीरें खींचने की शुरुआत हुई, उसके बाद उससे बढ़िया पेंटेक्स स्पोटमरिक और उसके बाद पिता के लाइका कैमरा का प्रयोग। और अब तो पाब्लो डिजिटल कैमरे पर भी काम कर रहे हैं।

अपने काम के बारे में पाब्लो कहते हैं- अपने कान की ओर जब मुड़कर देखता हूं तो लगता है कि मैं ने अपनी स्वाभाविक चेष्टानुसार मेरे मित्र और परिवार की तस्वीरें खींचीं, मैं अपने समाज के दरकिनार किए गए पक्ष से जुड़ा और शहरी दृश्यों को बारीकी से देखा, जिन पर किसी तस्वीरकार, कलाकार या फिल्म बनाने वाले ने ध्यान नहीं दिया है। ये सब उस समय और युग के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज हैं और अपने पैरों पर खड़े रहने की क्षमता रखती हैं।

यह प्रदर्शनी 29 फरवरी तक चलेगी।